P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

जनसंख्या वृद्धि का स्थानिक प्रतिरूप – हाड़ौती प्रदेश का एक अध्ययन

Spatial Pattern of Population Growth – A Case Study of Hadauti Region

जुबेर ख़ान
सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान, भारत

संदीप यादव
सह आचार्य,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
बूंदी, राजस्थान, भारत

सारांश

शोधपत्र में वर्ष 1971 से 2011 के मध्य हाड़ौती प्रदेश में हुई जनसंख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण किया गया है। हाड़ौती प्रदेश राजस्थान राज्य के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित एक भौगोलिक प्रदेश है। जिसमें वर्तमान में 15 तहसीलें है और शोधपत्र में इन सभी 15 तहसीलों को अध्ययन की इकाई माना गया है। प्रस्तुत शोधपत्र में हाड़ौती प्रदेश में वर्ष 1971 से 2011 तक के जनसंख्या आंकड़ों का विश्लेषण कर वर्ष 1971 से 1991 तथा 1991 से 2011 के मध्य हुई द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि के आधार पर मानचित्र तैयार किए गए। जिनसे इन वर्षों के दौरान हुए जनसंख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूपों को प्रदर्शित किया गया व साथ ही वर्ष 1971 से 2011 के मध्य सभी तहसीलों में जनसंख्या संवृद्धि के धनात्मक व ऋणात्मक परिवर्तनों को मानचित्र द्वारा स्पष्ट किया गया है। तथा अंत में जनसंख्या वृद्धि में हुए स्थानिक परिवर्तनों के कारणों को भी स्पष्ट किया गया।

मुख्य शब्द : हाड़ौती प्रदेश, द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या संवृद्धि, स्थानिक परिवर्तन।

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र का आर्थिक विकास वहाँ के मानव संसाधन पर निर्भर करता है। मानव द्वारा ही प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया जाता है। वास्तव में प्राकृतिक संसाधन निष्क्रिय होते हैं। ये केवल आर्थिक विकास की सुविधा मात्र प्रदान करते हैं, जबकि मानव का कार्य उनसे अधिकतम् उत्पादन करना होता है। इसलिए किसी भी क्षेत्र की जनसंख्या का अध्ययन करना महत्त्वपूर्ण है।

जनसंख्या भूगोल में जनसंख्या वृद्धि शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थों में किया जाता है। समय की विशिष्ट अवधि में किसी क्षेत्र में रहने वाली जनसंख्या की संख्या में परिवर्तन को जनसंख्या वृद्धि या परिवर्तन कहते हैं, चाहे वह परिवर्तन ऋणात्मक हो या धनात्मक। जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन आवश्यक होता है क्योंकि जनवृद्धि ही जनांकिकी–गतिशीलता के मूल में है, यह किसी प्रदेश के आर्थिक विकास की सूचक होती है, यही सामाजिक जागरूकता का प्रतीक है, जनसंख्या वृद्धि से ही राजनीतिक विचारधारा निर्धारित होती है, इसी से जनांकिकी तत्त्वों के मध्य और जनांकिकी तथा अजनांकिकी तत्त्वों के बीच के सह सम्बन्धों को समझा जा सकता है। जनसंख्या वृद्धि ही सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को परिवर्तित करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 1971 से 2011 तक जनसंख्या वृद्धि के स्थानिक प्रतिरूपों को उजागर करना।
2. वर्ष 1971 से 1991 तथा वर्ष 1991 से 2011 के मध्य द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण करना।
3. वर्ष 1971 से 2011 के मध्य जनसंख्या संवृद्धिमें हुए धनात्मक व ऋणात्मक परिवर्तनों के कारण को स्पष्ट करना।

विधि तंत्र

हाड़ौती प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण करने हेतु वर्ष 1971 1981 1991 2001 2011 के जनसंख्या आंकड़ों को आधार मानते हुए सारणीयन किया गया, जिसमें 10 वर्ष, 20 वर्ष, 30 वर्ष तथा 40 वर्ष में जनसंख्या में हुई प्रतिशत वृद्धि का विश्लेषण किया गया, तत्पश्चात अध्ययन क्षेत्र की सभी 15

तहसीलों में आधार वर्ष के आधार पर जनसंख्या वृद्धि का विश्लेषण कर द्विदशकीय वृद्धि के आधार पर मानचित्रण किया गया, तथा क्षेत्र में वर्ष 1971 से 2011 के मध्य जनसंख्या संवृद्धि में हुई धनात्मक व ऋणात्मक वृद्धि के परिवर्तनों को उजागर किया गया।

साहित्यावलोकन

वर्ष 1953 में जी.टी. ट्रिवार्था की अध्यक्षता में "Association of American Geographers" (AAG) नामक संस्था की स्थापना की गई, जिसमें सर्वप्रथम ट्रिवार्था ने अपने शोध पत्र "The case for Population Geography" का पत्रवाचन किया, उस समय से ही जनसंख्या भूगोल को भूगोल की अन्य शाखाओं के समान एक विशिष्ट स्थान मिला तथा भूगोलवेत्ताओं द्वारा जनसंख्या पर क्रमबद्ध तथा गहन विशेषीकृत तरीके से अध्ययन प्रारम्भ किया गया। सन् 1969 में जी.टी.ट्रिवार्था ने अपनी पुस्तक "A Geography of Population : World Patterns" में उन्होंने विश्व की जनसंख्या के वितरण, घनत्व, वृद्धि तथा स्थानान्तरण आदि पर विस्तृत विवेचन किया।एस.थामसन (1953–70) ने जनसंख्या समस्याओं का, सी.क्लार्क तथा ब्रासली (1958) ने क्रमशः नगरीय जनसंख्या घनत्व तथा जनसंख्या विश्लेषण की विधि पर, डी.जे.बोग्यू (1959-70) ने जनांकिकी सिद्धान्त तथा जनसंख्या के वितरण पर अध्ययन किया।

जनसंख्या अध्ययन में भारतीय विद्धानों– आशीष बोस, बी.एल.अग्रवाल, चन्द्रशेखर, एस.एन.अग्रवाल, आर.सी. चान्दना, जी.एस.गौसल, बी.एन.घोष, बी.एन.पुरी, वी.सी. मिश्रा, बी.सी.मेहता, मंसुर अहमद, एस.जे.मेहता, सूर्यकान्त, आर.एस.पी.गौसल, के.एन.दुबे, प्रेम सागर, स्मिता सेन गुप्ता, एस.सी.जुल्का, पी.के.शर्मा, सोढ़ीराम, धनेश्वरी, जितेन्द्र मोहन, मेहर सिंह गिल, एफ.जेड जमाली, एन.एल. गुप्ता, हेमलता जोशी, साधना कोठारी, इस्माइल हक, इन्देल सिंह, कमलकान्त दुबे, महेन्द्र बहादुर, जुजार सिंह, पुष्पा पथिक, गोपाल कृष्णा, हिथर जोशी, अब्दुल रजाक, नुरल आलम, ए.एस.पंवार, धर्मराज जोशी, लालुराम भगोरा, अन्जु कोहली, गुन्जन गर्ग आदि ने अपना अमूल्य योगदान दिया है।

हरिनारायण कोली (1996) ने पर्यावरण एवं मानव संसाधन में हाड़ौती के जनसंख्या एवं संसाधनों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात कर समस्याओं के निवारण हेतु सुझाव प्रस्तुत किये हैं।

रजनी सक्सैना (2002) ने द चैंजिंग पैटर्नस ऑफ पापुलेशन इन अजमेर सिटी में अजमेर नगर के 1981 से 1991 के मध्य जनसंख्या के परिवर्तनशील प्रतिरूपों का विश्लेषण किया।

जुबेर खान (2015) ने हाड़ोती प्रदेश में 1971 से 2011 के मध्य बदलते जनसंख्या प्रतिरूपों का विश्लेषण किया।

आर.पी. शर्मा ने (2016) में जनसंख्या परिवर्तन व दबाव का भूमि उपयोग प्रतिरूप पर अध्ययन किया।

डी.एस. रावत (2017) ने चंदौली जिले में जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन प्रस्तुत किया।

बजरंग बहादुर सिंह (2017) ने भूमि संसाधन व जनसंख्या का भौगोलिक अध्ययन में जनसंख्या का भूमि संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया।

शंभूराम (2018) ने प्रतापगढ़ तहसील में जनांकिकी गत्यात्मकता का अध्ययन किया। जिसके अंतर्गत जनांकिकी परिवर्तन का परिवार कल्याण पर पढ़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण किया गया।

अंजनी कुमार सिंह (2018) ने उत्तर प्रदेश के मऊ जिले में जनसंख्या पर्यावरण व विकास पर अध्ययन।

अध्ययन क्षेत्र

हाड़ौती प्रदेश राजस्थान के दक्षिणी–पूर्वी भाग में $24^0$25' से $25^0$51' उत्तरी आक्षांशों तथा $75^0$15' से $76^0$45' पूर्वी देशान्तरों के मध्य स्थित है। इस प्रदेश का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 14481.6 वर्ग किलोमीटर है। इस प्रदेश में सम्पूर्ण बून्दी जिला, रामगंज मण्डी तहसील को छोड़कर सम्पूर्ण कोटा जिला, छबड़ा किशनगंज एवं शाहबाद तहसीलों को छोड़कर सम्पूर्ण बारां जिला और झालावाड़ जिले की खानपुर तहसील सम्मिलित है। इस प्रदेश में 15 तहसीलें हैं जिनमें 2278 आबाद ग्राम और 19 नगर हैं। इस प्रदेश की मुख्य सदावाही नदी चम्बल है जिसकी सहायक नदियाँ काली सिंध, परवन, पार्वती एवं मेज है। यहाँ की जलवायु अर्द्धशुष्क एवं उपार्द्र हैं। कृषि कार्य यहाँ की जनसंख्या का प्रमुख व्यवसाय है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

अवस्थिति मानचित्र

मानचित्र1

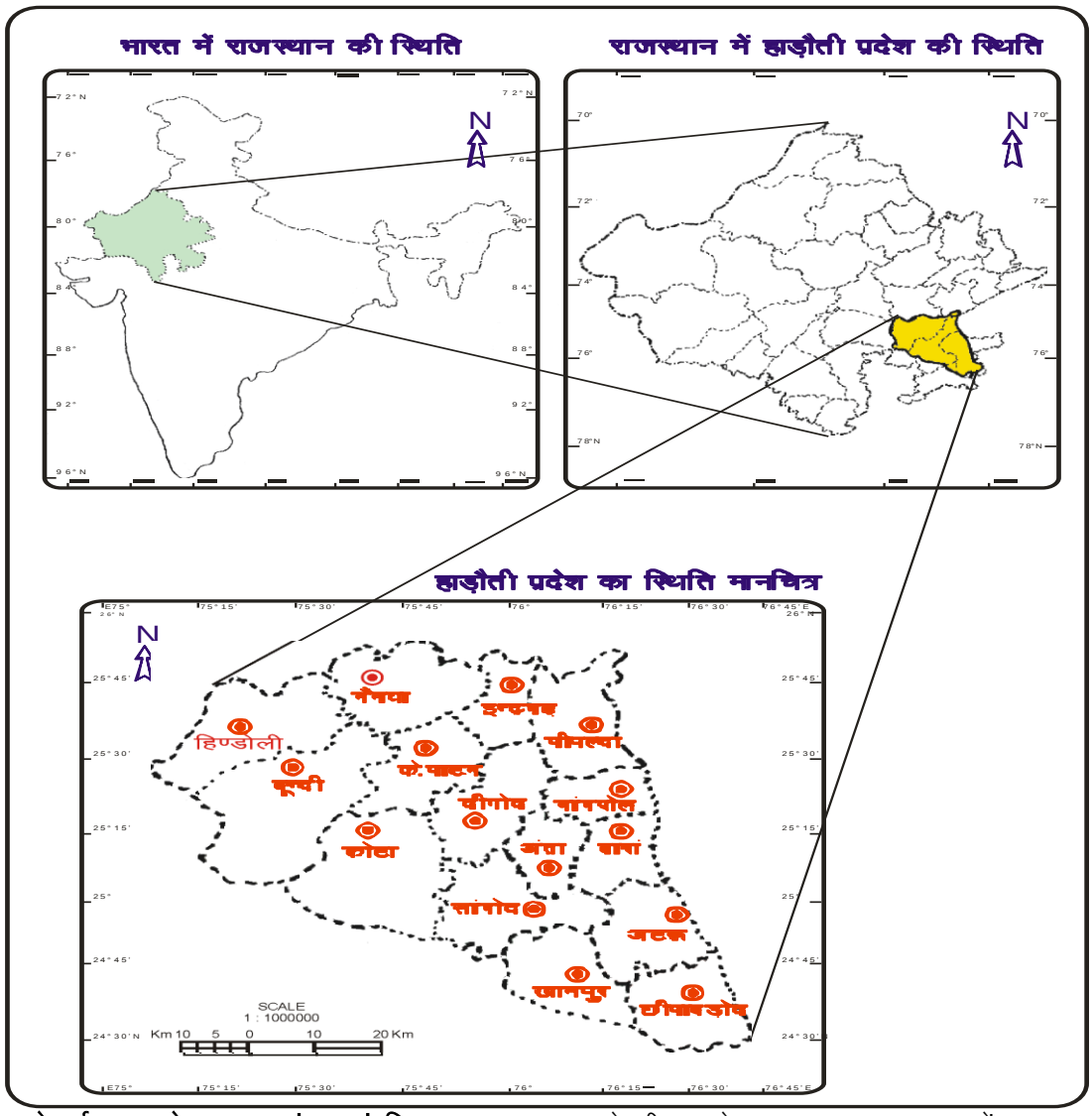

वर्ष 1971 से वर्ष 2011 के मध्य जनसंख्या संवृद्धि

हाड़ौती प्रदेश में भी भारत की तरह तीव्र जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्ति थी लेकिन देश की भांति यहां वृद्धि में गिरावट दर्ज हुई है। तालिका 3.1 से स्पष्ट है कि 1971–81 में हाड़ौती में प्रतिदशक परिवर्तन 34.12 प्रतिशत था जो 1981–91 के मध्य घटकर 30.23 प्रतिशत हो गया। 1991–2001 में जनसंख्या वृद्धि 25.86 प्रतिशत थी जो तीव्रता से घट कर 2001–2011 में 19.55 रह गई। 1971 से 2011 के मध्य चार दशकों में जनसंख्या वृद्धि 34.12 प्रतिशत से घटकर 19.67 प्रतिशत ही रह गई। इसी प्रकार 1971 की वार्षिक वृद्धि दर भी 3.4 से गिरकर 2011 में 1.9 रह गयी। जनसंख्या वृद्धि दर में कमी का कारण सरकार द्वारा चलाये गये परिवार नियोजन कार्यक्रमों के प्रसार का परिणाम है।

तालिका 1 हाड़ौती प्रदेश की जनसंख्या संवृद्धि (1971–2011)

	कुल जनसंख्या	दशकीय परिवर्तन	प्रति दशक परिवर्तन (%)	वार्षिक वृद्धि दर
1971	1415547	-	-	-
1981	1898550	483003	34.12	3.41
1991	2472540	573990	30.23	3.02
2001	3112057	639517	25.86	2.59
2011	3720433	608376	19.55	1.96

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

पूर्ण एवं प्रतिशत दशकीय परिवर्तन

हाड़ौती प्रदेश – तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि 1971 से 40 वर्षों में पूर्ण परिवर्तन 162.83 प्रतिशत था जबकि 1981 से 30 वर्षों में परिवर्तन 95.96 प्रतिशत था। अर्थात् 1971–81 के दशक में जनसंख्या वृद्धि दर 34.1 प्रतिशत थी जो काफी अधिक थी।

तालिका 2 पूर्ण एवं प्रतिशत दशकीय परिवर्तन

वर्ष	कुल जनसंख्या	पूर्ण एवं प्रतिशत वृद्धि अन्तरालों में			
		10 वर्ष	20 वर्ष	30 वर्ष	40 वर्ष
1971	1415547	-	-	-	-
1981	1898550	483003(34.12)	1056993(74.67)	1696510(119.85)	2304886(162.83)
1991	2472540	573990 30.23)	1213507(63.92)	1821883(95.96)	-
2001	3112057	639517(25.86)	1247893(50.47)	-	-
2011	3720433	608376(19.55)	-	-	-

कोष्ठक में संख्याएँ प्रतिशत में हैं।

1991 से 2011 के मध्य 20 वर्षों में वास्तविक प्रतिशत वृद्धि 50.47 प्रतिशत थी जो 2001 में 25.86 प्रतिशत की तीव्र गिरावट दिखाती है। और अगले 10 वर्षों में वृद्धि में और गिरावट हुई और वह 19.55 प्रतिशत दर्ज की गई।

तहसील वार परिवर्तन

तालिका 3 वमानचित्र 3.1A में 1971–91 के 20 वर्षों में हुई जनसंख्या वृद्धि को दर्शाया गया है। मानचित्र से स्पष्ट होता है कि इस दौरान सबसे कम जनसंख्या वृद्धि (40 प्रतिशत से कम) पीपल्दा तहसील में रही जो कि मुख्यतया कृषि प्रधान क्षेत्र है एवं पूर्णतयाः ग्रामीण है। यहाँ 30.04 प्रतिशत वृद्धि दर थी। पाँच तहसील क्रमशः अटरू, छीपा बड़ौद, खानपुर, नैनवां और सांगोद में जनसंख्या वृद्धि दर 40 से 60 प्रतिशत के मध्य थी। नैनवां को छोड़ सभी तहसीलें हाड़ौती के दक्षिणी भाग में स्थित हैं।

तालिका 3 द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि 1971–1991

क्र.स.	तहसील	1971	1981	1991	जनसंख्या वृद्धि 1971–1991
1.	अटरू	70745	86392	107431	51.86
2.	अंता	-		-	-
3.	बारां	84422	107884	138588	64.16
4.	बून्दी	161049	213648	279064	73.28
5.	छीपाबड़ौद	75498	94574	116044	53.70
6.	दीगोद	75887	99052	123824	63.17
7.	हिण्डोली	93757	124341	151669	61.77
8.	इन्द्रगढ़	-		-	-
9.	के.पाटन	108629	140955	205715	89.37
10.	खानपुर	87103	107572	129170	48.30
11.	लाडपुरा	284834	455236	663013	132.77
12.	मांगरोल	98244	123168	158914	61.75
13.	नैंनवा	85586	108038	133800	56.33
14.	पीपल्दा	97753	125014	127120	30.04
15.	सांगोद	92040	112676	138188	50.14
	योग	1415547	1898550	2472540	74.67

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-4 (Part-1) May-2019
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

मानचित्र 3.1

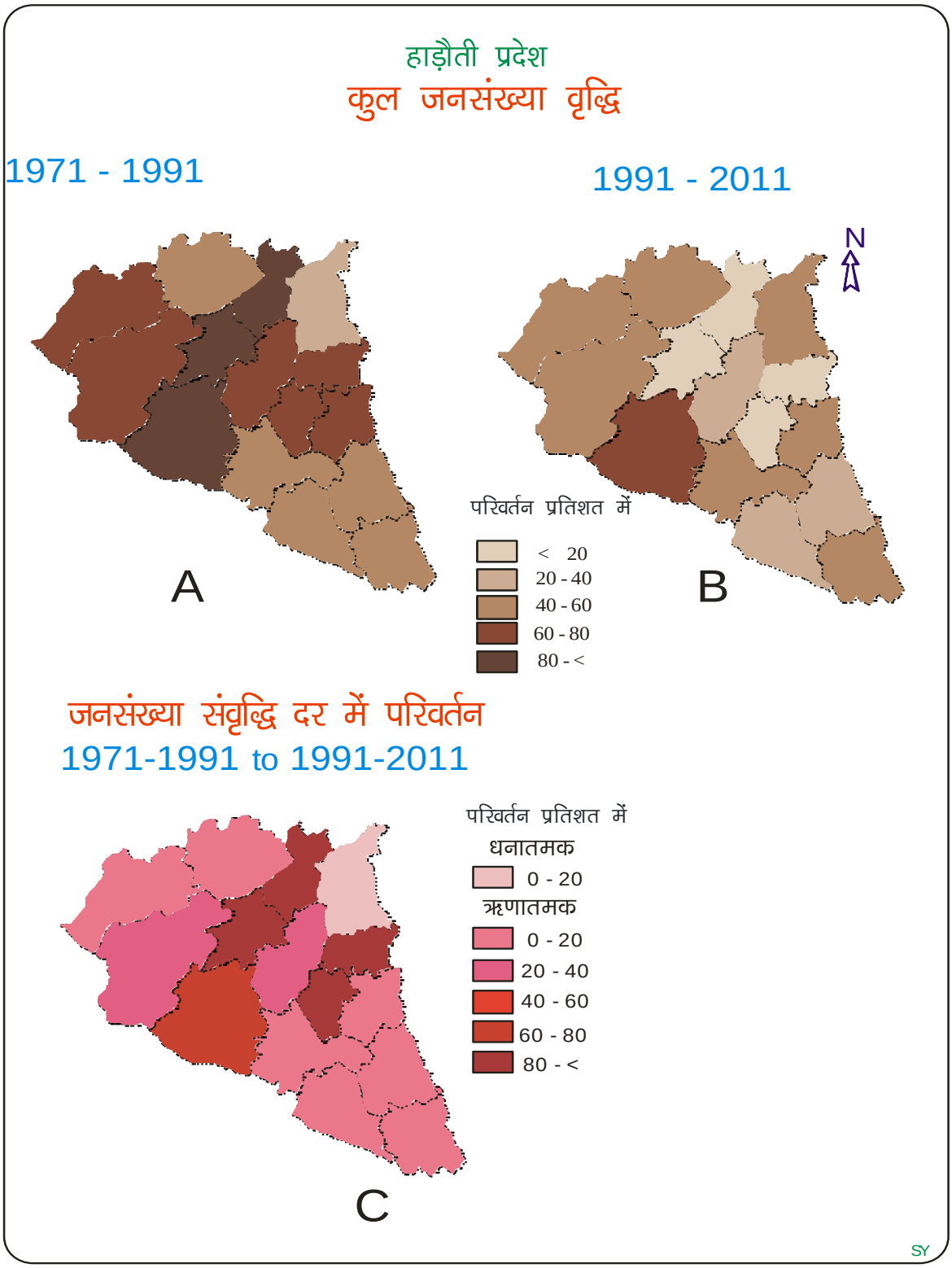

पाँच तहसील क्रमशः बारां, बून्दी, दीगोद, हिण्डोली और मांगरोल में जनसंख्या वृद्धि दर 60 से 80 प्रतिशत के मध्य दर्ज की गयी। ये सभी तहसील हाड़ौती के पूर्वी एवं पश्चिमी भाग में स्थित हैं। जबकि दो तहसील केशोराय पाटन एवं लाडपुरा में सर्वाधिक वृद्धि क्रमशः 89. 37 प्रतिशत एवं 132.77 प्रतिशत दर्ज की गई क्योंकि इन दोनों तहसीलों में उच्च औद्योगिक विकास होने के कारण जनसंख्या को रोज़गार के अवसर मिलने के फलस्वरूप जनसंख्या का केन्द्रीकरण यहाँ देखा गया।

तालिका 4 द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि 1991–2011

क.स.	तहसील	1991	2001	2011	जनसंख्या वृद्धि 1991–2011
1.	अटरू	107431	132944	149959	39.59
2.	अंता	-	103835	120038	-
3.	बारां	138588	181807	213555	54.09
4.	बून्दी	279064	352174	411533	47.47
5.	छीपाबड़ौद	116044	143885	170886	47.26
6.	दीगोद	123824	150587	168734	36.27
7.	हिण्डोली	151669	189290	221601	46.11
8.	इन्द्रगढ़	-	111747	124082	-
9.	के.पाटन	205715	138008	153987	-25.15
10.	खानपुर	129170	153370	173193	34.08
11.	लाडपुरा	663013	868213	1143792	72.51
12.	मांगरोल	158914	93550	106963	-32.69
13.	नैंनवा	133800	171401	196070	46.54
14.	पीपल्दा	127120	155646	179800	41.44
15.	सांगोद	138188	165600	186240	34.77
	योग	2472540	3112057	3720433	50.47

तालिका 4 व मानचित्र 3.1B में 1991–2011 के 20 वर्षों में हुई जनसंख्या वृद्धि को दर्शाया गया है। मानचित्र से स्पष्ट होता है कि इस दौरान 2 तहसील क्रमशः केशोराय पाटन और मांगरोल में ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी क्योंकि इन दोनों तहसीलों से दो नई तहसील इन्द्रगढ़ और अन्ता का निर्माण हुआ था। जबकि 4 तहसील क्रमशः अटरू, दीगोद, खानपुर और सांगोद में जनसंख्या वृद्धि 20 से 40 प्रतिशत के मध्य देखी गयी। छः तहसील क्रमशः बारां, बून्दी, छीपाबड़ौद, हिण्डोली, नैनवां और पीपल्दा में 40 से 60 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि दर्ज हुई। इनमें बारां में सर्वाधिक 54.09 प्रतिशत वृद्धि देखी गयी क्योंकि इस तहसील में आधारभूत ढाँचे का विकास जैसे स्वर्णिम चतर्भुज वाली चार लेन वाला राष्ट्रीय राजमार्ग, भोपाल–कोटा रेल मार्ग के साथ ही उन्नत कृषि पृष्ठभूमि (hinterland) ने भी जनसंख्या वृद्धि में सहयोग किया। बारां तहसील में धान की खेती और चावल मिलों के कारण भी रोजगार के अवसर अधिक होने के कारण जनसंख्या वृद्धि अधिक पायी गयी। 1991–2011 के मध्य लाडपुरा एकमात्र तहसील थी जहाँ सर्वाधिक जनसंख्या वृद्धि 75.51 प्रतिशत दर्ज की गई। यहाँ कोटा शहर जनसंख्या वृद्धि का प्रमुख कारण है क्योंकि कोटा शहर औद्योगिक नगरी के साथ ही शैक्षणिक नगरी के रूप में भी जनसंख्या को अपनी ओर आकर्षित कर पाया।

जनसंख्या संवृद्धि दर में परिवर्तन

द्विदशकीय जनसंख्या वृद्धि दर में परिवर्तन तालिका 5 वमानचित्र मानचित्र 3.1C में 1971–2011 के मध्य जनसंख्या संवृद्धि दर में हुए परिवर्तन को दर्शाया गया है।

तालिका 5 जनसंख्या संवृद्धि दर में परिवर्तन1971–2011

क.स.	तहसील	जनसंख्या वृद्धि 1971–1991	जनसंख्या वृद्धि 1991–2011	जनसंख्या संवृद्धि दर में परिवर्तन
1.	अटरू	51.86	39.59	-12.27
2.	अंता	-	-	-
3.	बारां	64.16	54.09	-10.07
4.	बून्दी	73.28	47.47	-25.81
5.	छीपाबड़ौद	53.7	47.26	-6.44
6.	दीगोद	63.17	36.27	-26.90
7.	हिण्डोली	61.77	46.11	-15.66
8.	इन्द्रगढ़	-	-	-
9.	के.पाटन	89.37	-25.15	-114.52
10.	खानपुर	48.3	34.08	-14.22
11.	लाडपुरा	132.77	72.51	-60.26
12.	मांगरोल	61.75	-32.69	-94.44
13.	नैंनवा	56.33	46.54	-9.79
14.	पीपल्दा	30.04	41.44	11.40
15.	सांगोद	50.14	34.77	-15.37
	योग	74.67	50.47	-24.20

मानचित्र से स्पष्ट होता है कि पीपल्दा एकमात्र तहसील है जहां धनात्मक 11.4 प्रतिशत वृद्धि दर्ज की गई। जबकि अन्य सभी तहसीलों में वृद्धि ऋणात्मक दर्ज हुई। केशोराय पाटन में सर्वाधिक ऋणात्मक 114.51 प्रतिशत दर्ज हुई। इसका मुख्य कारण केशोराय पाटन सहकारी चीनी मिल के बन्द हो जाने से रोजगार के अवसर में कमी होने के फलस्वरूप जनसंख्या यहाँ से बाहर की ओर प्रवास कर गयी।

मांगरोल तहसील में भी ऋणात्मक वृद्धि देखी गयी क्योंकि इसमें से अन्ता तहसील का निर्माण हुआ। इन्द्रगढ़ तहसील में केशोराय पाटन जैसी ही वृद्धि दर्ज हुई क्योंकि ये भी के0पाटन के विभाजन से बनी। कोटा शहर वाली लाडपुरा तहसील में भी ऋणात्मक 60.26 प्रतिशत वृद्धि पायी गई क्योंकि कोटा में कई उद्योग बन्द हो गये और रोजगार प्रभावित हुआ। हाड़ौती का दक्षिणी भाग एवं उत्तर–पश्चिमी हिस्से में ऋणात्मक 20 प्रतिशत से शून्य के मध्य जनसंख्या वृद्धि दर्ज हुई।

निष्कर्ष

हाड़ौती प्रदेश में भी जनसंख्या वृद्धि का प्रतिरूप वैसा ही रहा जैसा की संपूर्ण देश का, अर्थात् जनसंख्या वृद्धि में निरंतर गिरावट देखी गई, जहां वर्ष 1971 से वर्ष 1981 के मध्य वृद्धि दर 34.12 प्रतिशत थी, जो घटकर वर्ष 2001 से वर्ष 2011 के मध्य 19.67 प्रतिशत रह गई। जनसंख्या वृद्धि दर में इस गिरावट का प्रमुख कारण सरकार द्वारा चलाए गए परिवार नियोजन कार्यक्रम शैक्षणिक स्तर में वृद्धि तथा स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार रहा। वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र में बढ़ते रोजगार व जीवन स्तर में सुधार के कारण जनसंख्या वृद्धि दर में निरंतर गिरावट देखी जा रही है, जो कि प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य के लिए अच्छा संकेत है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

Books

Ackerman, E.A. (1959), The Study of population, Chicago, The University of Chicago Press.

Bose, A. (1967), Patterns of population change in India, Bombay.

Chandna, R.C. & Sidhu, S.M. (1980), Introduction to Population Geography, New Delhi.

Dubey, R.M. (1981), Population dynamism in India, Allahabad.

Ghosh, B.N. (1985), Fundamentals of Population Geography, Sterling Publishers Private Ltd., New Delhi.

Husain, I.Z. (1972), Population Analysis and Studies, Bombay.

Jamali, F.Z.(1995), Population Geography of Nimar, Gorakhpur, Vasundhara Prakashan.

Mishra, J.P.(2013), Demography, Agra, Sahitya Bhawan.

Ojha,R.(1989), Population Geography, Kanpur, Pratibha Prakashan.

Journal

Brush, J.E.(1968), Spatial Pattern of Population in Indian cities, Geographical Review, pp 58.

Gosal, G.S.(1982), Recent Population Growth in India, Population Geography, No.1, Vol. 4.

Prakash, O. (1970), Pattern of Population in U.P., National Geographical Journal of India, Vol. 16

Trewartha, G.T.(1953), A case for Population Geography, Annals of the Association of American Geographers, Vol.43.

Census Publication

District Census Handbook, Baran, 2001.

District Census Handbook, Bundi, 1971, 1981, 1991, 2001.

District Census Handbook, Jhalawar, 1971, 1981, 1991, 2001.

District Census Handbook, Kota, 1971, 1981, 1991, 2001.

Rajasthan PCA, Baran, Bundi, Kota, Jhalawar, 2011.